Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ-7 संदेह (कहानी) लेखक - जयशंकर प्रसाद

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक 'साहित्य सागर' की पृष्ठ संख्या बयालीस पर दिए पाठ-7 'संदेह' नामक कहानी के शेष भाग का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! आज हम पृष्ठ संख्या 43 से कहानी का अध्ययन करेंगे। आशा है कि पीछे हमने जितना पढ़ा आपने समझ लिया होगा।

रामनिहाल को लगता था कि चतुराई दिखाना बड़प्पन है परन्तु मनुष्य को चतुर नहीं होना चाहिए क्योंकि मनुष्य अधिक चतुर बनकर अपने आप को अभागा बना लेता है और भगवान की दया से वंचित हो जाता है। रामनिहाल को अनुभवों से यह ज्ञात हो गया कि चतुर मनुष्य पर ईश्वर भी दया नहीं करते। उसके अनुसार उसकी महत्त्वाकांक्षा, उसके उन्नतिशील विचार उसे बराबर दौड़ाते रहे। वह अच्छी नौकरी पाने एवं सुयोग्य जीवन जीने की इच्छा से जगह-जगह भटकता रहा। ऐसा करके वह अपनी किस्मत को ही धोखा देता रहा। यह भी उसका पेट तो भर ही देता था। कभी-कभी उसे लगता कि वह अपनी चतुराई से अवसर का लाभ उठाकर जीवन की बाज़ी जीत लेगा। ज़िंदगी में यदि दाँव (मौका) सही लग गया तो वह ज़िंदगी के सुखों को भोग पाएगा। वह सुख की खोज में घूमता रहा परन्तु उसे कभी सच्चा सुख प्राप्त नहीं हुआ और न ही मन को शांति मिली। यह उसके

कक्षा - दसवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-7 'संदेह')

लिए मृग-मरीचिका (ऐसी तृष्णा (कामना) जो संभव न हो) के समान था। यह उसका भ्रम था। एक ऐसे स्वप्न के समान, जो कभी सच न हो।

रामनिहाल एक घटना के संबंध में श्यामा से कहता है कि वह पहले ब्रजकिशोर के यहाँ नौकरी करता था। वे लोग बड़े ही सुशिक्षित और सज्जन हैं। वह श्यामा को यह भी विश्वास दिलाना चाहता है कि वह श्यामा के घर को अपना घर समझता है परन्तु अब उसे घर छोड़कर जाना पड़ रहा है। श्यामा उसे व्यर्थ की बातें छोड़कर काम की बात बताने को कहती है। रामनिहाल, श्यामा को अपना शुभचिंतक, मित्र और रक्षक समझते हुए अपने मन की बात बता देना चाहता है। वह मन की बात को मन में ही रखकर भार की तरह जीना नहीं चाहता। वह बताना आरंभ करता है। अभी चैत्र (हिन्दू कैलेण्डर के अनुसार प्रथम महीना (मार्च-अप्रैल) का महीना चल रहा है लेकिन वह जो घटना श्यामा को बता रहा है तब कार्तिक की (अक्टूबर-नवम्बर) पूर्णिमा थी। रामनिहाल और ब्रजकिशोर साथ काम करते थे। रामनिहाल अपने कामकाज से छुट्टी पाकर शाम की शोभा देखने बनारस में स्थित दशाश्वमेध पर जाने के लिए तैयार ही था कि ब्रजकिशोर ने उसे कहा कि उसके घर संबंधी आए हैं। समयाभाव या आवश्यक काम के कारण वह स्वयं अपने अतिथियों के साथ उन्हें गंगा घाट घुमाने नहीं जा सकते इसलिए तुम उन्हें बनारस के घाटों के भ्रमण के लिए ले जाओ। रामनिहाल ने स्वीकार कर लिया। कुछ देर इंतज़ार करने के बाद भीतर से एक सुन्दर स्त्री (मनोरमा) के साथ एक पुरुष (मोहन बाबू) निकले। उन्हें देखते ही वह समझ गया कि उसे इन्हीं लोगों के साथ जाना होगा। ब्रजकिशोर ने अपने संबंधी मोहन बाबू तथा मनोरमा को बताया कि मानमंदिर पर बजरा बिलकुल ठीक है। रामनिहाल आपके साथ जा रहे हैं। आवश्यक काम के कारण वे नहीं जा पा रहे हैं लेकिन आप लोगों को कोई परेशानी नहीं होगी। यह बात सुनकर मोहनबाबू के मस्तक की रेखाएँ तन गईं (खिंच गईं)।

परन्तु मनोरमा ने ब्रजकिशोर से कहा कि ठीक है। आप अपना काम कीजिए तब तक हम घूम आते हैं। जब वे तीनों (रामनिहाल, मनोरमा और मोहनबाबू) मानमन्दिर पहुँचे तो नाव पर चाँदनी बिछी थी। पूर्णिमा की रात होने के कारण चाँदनी फैली हुई थी। मोहनबाबू बजरे (बड़ी नाव) पर जाकर बैठ गए परन्तु मनोरमा को बजरे पर चढ़ने में डर लग रहा था। रामनिहाल ने मनोरमा का हाथ पकड़कर उसे बजरे में बिठाया। तभी मनोरमा ने रामनिहाल के कान में कहा कि मेरे पति पागल बनाए जा रहे हैं। कुछ-कुछ हैं भी, ज़रा सावधान रहिएगा क्योंकि नाव की बात है। मनोरमा को अपने पति की सुरक्षा का भय बना रहता था कि कहीं ब्रजकिशोर संपत्ति के लालच में उसके पति को पागल सिद्ध करके उसकी संपत्ति का मालिक न बन जाए। अतः मनोरमा ने रामनिहाल से बजरे में बैठे पति की सुरक्षा के लिए सहायता माँगी।

मनोरमा, रामनिहाल से नाव में विशेष रूप से सावधान रहने का अनुरोध कर रही थी। मोहनबाबू गंगा की धारा में छोटे-छोटे दीपक बहते हुए देखकर आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने इन दीपकों की तरफ़ मनोरमा का ध्यान आकर्षित करवाते हुए पूछा कि क्या तुम इस दीपदान का अर्थ समझती हो? तब मनोरमा ने कहा कि इसका अर्थ है - गंगा की पूजा। लोग गंगा जी की पूजा करके दीपक को गंगा जी की धारा में प्रवाहित कर देते हैं।

मोहनबाबू अपनी पत्नी मनोरमा के उत्तर से संतुष्ट नहीं हुए और बोले यही तो मेरा और तुम्हारा मतभेद है अर्थात् मोहनबाबू की विचारधारा मनोरमा की विचारधारा से भिन्न थी। मनोरमा किसी भी बात को गहराई से नहीं समझती जबकि मोहन बाबू की दृष्टि सूक्ष्म है। मनोरमा के अनुसार नदी के तट पर दीपदान गंगा की पूजा है। परन्तु मोहनबाबू के अनुसार गंगा का अर्थ अनंत धारा एवं दीप का अर्थ लघु जीवन है। मोहनबाबू ने मनोरमा को समझाया कि जिस प्रकार लोग दीप का दान करते हुए उन्हें गंगा की अनंत धारा में बहा

देते हैं। उसी प्रकार मनुष्य अपना जीवन समय की अनंत धारा को समर्पित कर देता है। मनोरमा ने जब धीरे से रामनिहाल के कानों में कहा कि देखा न आपने। मैंने कहा था कि मेरे पति की दीमागी स्थिति ठीक नहीं है।

रामनिहाल यह देखकर चकित हो रहा था। नाव पंचगंगा घाट के समीप पहुँच गई थी। तभी मनोरमा ने अपने पति से कहा कि यह बाँसों में टँगे हुए दीपक को देखकर आप क्या कहेंगे ?

यह सुनकर मोहनबाबू ने तुरंत कहा कि आकाश की कोई सीमा नहीं है। यह जीवन रूपी दीप को अनंत की धारा में बहा देने का संकेता है। फिर हाँफते हुए मोहन बाबू ने कहा कि मुझे अकपट प्यार की आवश्यकता थी अर्थात् जिसमें छल, कपट, धोखा न हो, जो उन्हें कभी नहीं मिला। तुमने भी मनोरमा ! अर्थात् मोहन बाबू को संदेह है कि मनोरमा भी ब्रजकिशोर के साथ मिली हुई है।

जब मोहन बाबू, मनोरमा से कहते हैं कि मुझे अकपट प्यार की आवश्यकता थी, जो तुमने मुझे नहीं दिया। तब मनोरमा मोहनबाबू को चुप हो जाने के लिए कहती है। मोहन-बाबू कहते हैं कि मैं शांत क्यों हो जाऊँ, क्या रामनिहाल सामने है इसलिए शांत हो जाऊँ। वह यदि जान भी जाएगा तो मुझे इसका डर नहीं है। तुम लोग अर्थात् मनोरमा और ब्रजकिशोर सत्य को छुपाकर धोखा क्यों दे रहे हो ? मोहनबाबू की श्वास गति अर्थात् साँसें तेज़ चल रही थीं। मनोरमा ने निराश भाव से रामनिहाल की ओर देखा। चाँदनी रात में मनोरमा प्रतिमा (मूर्ति) के समान कोई प्रयास नहीं कर पा रही थी।

मोहनबाबू की बातें सुनकर मनोरमा सावधान हो गई। उसने माँझी को वापिस लौटने के लिए कहा। कार्तिक मास की रात्रि चाँदनी के कारण शीतल हो चली थी। नाव मानमन्दिर घाट, जहाँ से वे नाव पर बैठे थे, उसी ओर घूमी। रामनिहाल, मोहनबाबू की मनः स्थिति के बारे

में सोच रहा था। थोड़ी देर चुप रहने के बाद मोहन बाबू फिर कहने लगे कि मुझे पागल बनाने का जो तुम दोनों ने उपाय सोचा है, मैं समझ रहा हूँ।

मनोरमा ने मोहनबाबू से कहा कि आप चुप न रहकर व्यर्थ का संदेह कर रहे हैं। यह व्यर्थ का संदेह अपने मन से निकाल दीजिए या मेरे लिए ज़हर मँगवा दीजिए अर्थात् मनोरमा, मोहनबाबू की संदेह भरी बातें सुनने की बजाए ज़हर खाकर मर जाना चाहती है।

स्वस्थ होकर अर्थात् अब मोहनबाबू की मानसिक स्थिति में परिवर्तन हो रहा है। पहले मोहनबाबू मनोरमा के चरित्र पर संदेह करते हुए उस पर अविश्वास का इलज़ाम लगा रहे थे। परन्तु बाद में अपने अपराध को स्वीकार करते हुए मोहनबाबू ने मनोरमा से क्षमा माँगी और पाँव पकड़कर माफ़ी माँगने लगे। मनोरमा पैर छुड़ाती हुई पीछे खिसकी। उसके शरीर का स्पर्श रामनिहाल से हो गया। मनोरमा की स्थिति एक ऐसी युवती की तरह थी जो क्रोध और संकोच में, आशा और निराशा की अवस्था में किसी का सहारा पाने के लिए व्याकुल हो गई थी। मनोरमा ने दया भरी नज़र से रामनिहाल की ओर देखते हुए कहा - 'आप देखते हैं न'।

रामनिहाल सब देख रहा था। गंगा की धारा पर बजरा आगे बढ़ रहा था। रामनिहाल को लगा कि एक सुन्दर स्त्री मुझसे सहारा माँग रही है। किसी स्त्री के चरित्र पर शक करना उसके लिए असहनीय हो जाता है। यही बोझ मनोरमा से भी सहा नहीं जा रहा था। ऐसा लगता था मानो मनोरमा एक याचिका की तरह रामनिहाल से प्रार्थना करती है कि कुछ मत देखो। मेरे साथ हो रहा मज़ाक देखने की वस्तु नहीं है।

रामनिहाल चुप था। मानमन्दिर घाट पर बजरा रुका। जब वह बजरे पर से उतर रहा था तो मनोरमा ने उतरते हुए रामनिहाल का हाथ पकड़ा ताकि वह सहारा लेकर अच्छी तरह उतर सके। रामनिहाल का हृदय चंचल था और वह स्वयं को मोहन बाबू से श्रेष्ठ समझकर धन्य मानने लगा। मनोरमा अपने

पति की पागलों जैसी हरकतें करने के कारण परेशान थी। वह मनोरमा के चरित्र पर संदेह भी करने लगता है इसलिए मनोरमा धीरे-से रामनिहाल को कहती है कि मेरी विपत्ति में आप मेरी सहायता नहीं करेंगे। उस समय रामनिहाल अवाक् अर्थात् कुछ बोल पाने की स्थिति में न था।

रामनिहाल ने श्यामा को बताया कि मुझे धीरे-धीरे मालूम हुआ कि ब्रजकिशोर बाबू मोहनबाबू को अदालत में पागल करार कर देने पर उनकी संपत्ति के प्रबंधक बनना चाहते हैं क्योंकि वे उनके निकट के संबंधी है। रामनिहाल कहता है कि यह संसार तो दूसरों को मूर्ख बनाने के व्यवसाय पर चल रहा है। मोहनबाबू इस संदेह के कारण पागल बन गए हैं। तुम्हारे सामने यह चिट्ठियों का बण्डल है, वह मनोरमा का है। मनोरमा ने रामनिहाल को इस घटना के बाद कई पत्र लिखे हैं। अब वह रामनिहाल को मदद के लिए अपने पास बुला रही है। जब श्यामा ने तीखी नज़रों से रामनिहाल की ओर देखा तो वह कहने लगा कि तुमको भी संदेह हो रहा है अर्थात् श्यामा को संदेह है कि मनोरमा के इतने सारे पत्र आने के कारण वह उसकी (मनोरमा) की ओर आकर्षित तो नहीं हो रहा। रामनिहाल को भी संदेह है कि मनोरमा उससे स्नेह करने लगी है इसीलिए वह पत्र लिख रही है। वह स्वयं नहीं जानता कि मनोरमा उसे इस समय क्यों बुला रही है।

रामनिहाल की बुद्धिहीन बातें सुनकर श्यामा को हँसी आ गई क्योंकि रामनिहाल समझ रहा था कि मनोरमा उससे प्यार करती है। उसका यह संदेह दूर करते हुए श्यामा कहती है कि तुम ऐसा क्यों सोच रहे हो। श्यामा ने रामनिहाल के हाथ से चित्र खींचा। श्यामा को लगा कि रामनिहाल के हाथ में मनोरमा का चित्र होगा। लेकिन वह चित्र तो श्यामा का था। यह देखकर श्याम को आश्चर्य हुआ। वह बोली क्या तुम मुझसे प्रेम करने का लड़कपन करते हो। अर्थात् मनोरमा तुम्हें प्यार करती है और तुम मुझे। मन के मनोरंजन के लिए तुमने यह अच्छा साधन जुटाया है। तभी कायरों की तरह सामान

कक्षा - दसवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ - 7 'संदेह')

लेकर चले जाने की तैयारी कर ली है।

रामनिहाल हतबुद्धि-सा श्यामा को इसलिए देखने लगा कि रामनिहाल की चोरी पकड़ी गई। वह मन ही मन श्यामा को चाहता था, श्यामा से प्यार करता था परन्तु श्यामा को यह बताया नहीं था। चित्र देखकर रामनिहाल की श्यामा के सामने पोल खुल चुकी थी। श्यामा अपनी बुद्धिमता और दूरदर्शिता से रामनिहाल के मन का संदेह दूर करती हुई कहती है कि प्यार करना बड़ा कठिन है। तुम इस खेल को नहीं जानते। श्यामा रामनिहाल के संदेह को दूर करते हुए उसे सही सलाह देती हुई कहती है कि एक दुखिया स्त्री (मनोरमा) तुम्हें अपनी सहायता के लिए बुला रही है। श्यामा अच्छी तरह जानती है कि एक स्त्री को जीवन में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इसलिए वह रामनिहाल से पटना जाकर मनोरमा की ब्रजकिशोर की चालाकियों से रक्षा करके पुनः यहीं लौट आने को कहती है।

बच्चो! आज हमारा यह पाठ समाप्त हो चुका है। आशा है कि आपने इसे समझा होगा। पाठ को पूर्णता से समझने के लिए पाठ को पुनः पढ़ें एवं समझने का प्रयास भी करें।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो:-

"तुमको भी संदेह हो रहा है ---------- बुला रही है।"

(पाठ्य पुस्तक पृष्ठ सं० 47)

(क) रामनिहाल को किस पर और क्यों संदेह हो रहा है?

(ख) श्रोता के संदेह के बारे में लिखिए। श्रोता और वक्ता के संदेह में क्या अंतर है, स्पष्ट कीजिए।

(ग) श्रोता का परिचय दीजिए तथा उसका चरित्र-चित्रण कीजिए।

(घ) 'संदेह' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]